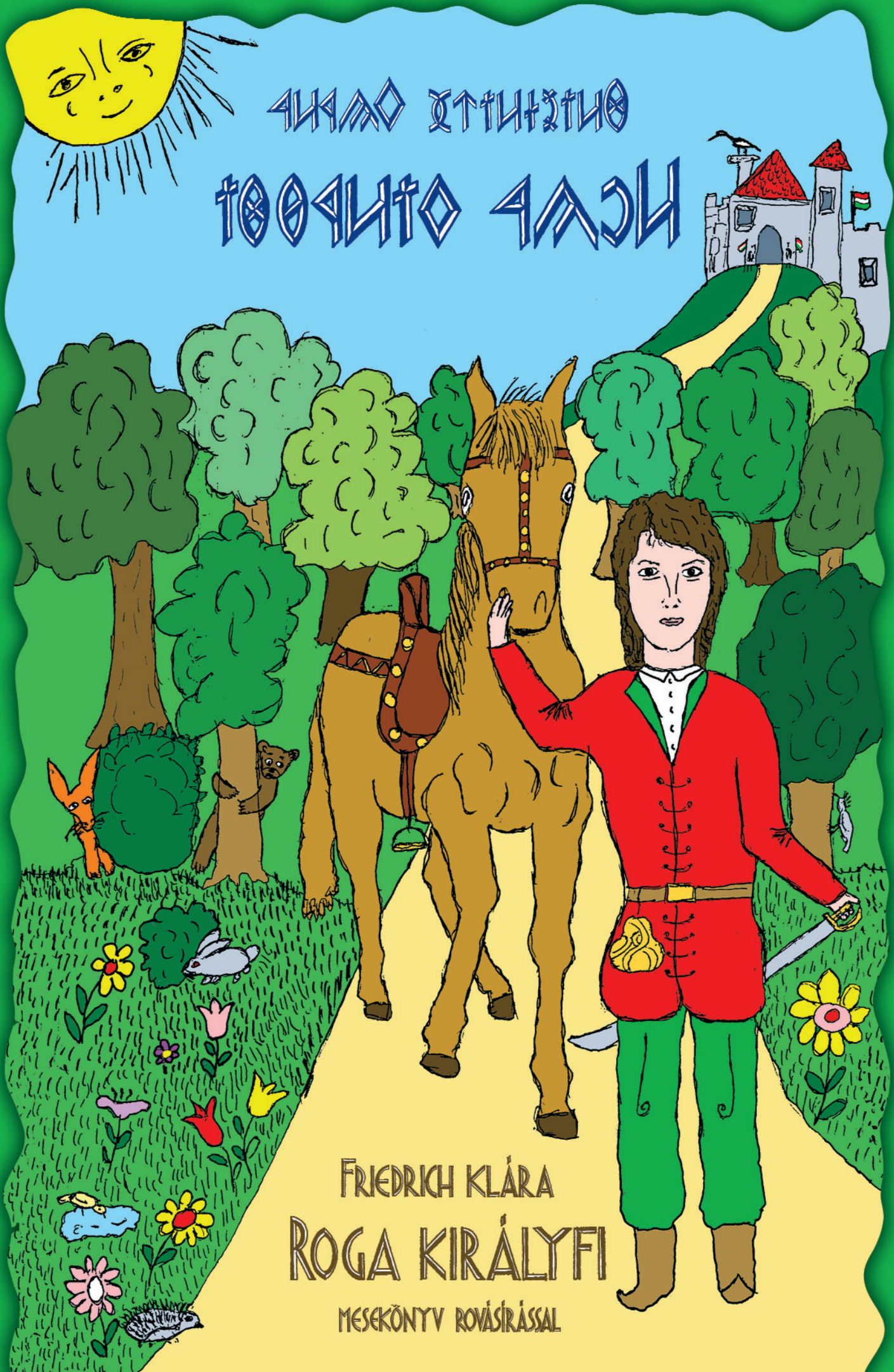

FRIEDRICH KLÁRA

ROGA KIRÁLYFI

MESEKÖNYV ROVÁSÍRÁSSAL

A FORRAI-FÉLE ROVÁS-ABC

(Ü)	(S)	(NY)	(J)	(É)	(A)
(V)	(SZ)	(O)	(eK)	(F)	(Á)
(Z)	(T)	(Ó)	(aK)	(G)	(B)
(ZS)	(TY)	(Ö)	(L)	(GY)	(C)
	(U)	(Ö)	(LY)	(H)	(CS)
	(Ú)	(P)	(M)	(I)	(D)
	(Ü)	(R)	(N)	(Í)	(E)

A rovásírást jobbról balra haladva írjuk és olvassuk.

Friedrich Klára

Roga királyfi

mesekönyv rovásírással

Miklós fiunknak és minden magyar gyermeknek szeretettel, hogy életkoruktól függetlenül, a világ bármely tájára vesse őket a sors, e történelmi mese tanulságait el ne feledjék.

ÍRTA: FRIEDRICH KLÁRA
RAJZOLTA: SZAKÁCS GÁBOR
ROVÁSRA KÉZZEL ÁTÍRTA: DITTLER FERENC

KIADTA: SZAKÁCS GÁBOR

2. KIADÁS

KÉSZÜLT: 2004-BEN, BUDAPESTEN
ISBN: 963-460-293-2

A KIADVÁNYT GONDOZTA:
B'ARTBOX KFT.

Часть первая

Давным-давно, когда ещё Земля была молодой, жили в ней люди, звери и разные существа. Жили они в ладу и согласии, друг друга не обижали, а если ссорились, то быстро мирились. Но вот пришло время, и стали люди сильнее, звери — злее, а разные существа — хитрее. Стали они ссориться, драться, обманывать друг друга. Не стало в Земле ни ладу, ни согласия. Тогда Земля сказала: «Не хочу я больше такой жизни! Пусть Небо сделает с ними что-нибудь!» Услышало Небо Землю и решило: «Пусть Время сделает с ними что-нибудь!» Время же сказало: «Пусть Пространство сделает с ними что-нибудь!» Пространство же сказало: «Пусть Земля сделает с ними что-нибудь!» Земля же сказала: «Пусть Небо сделает с ними что-нибудь!» Так прошло Время, Пространство и Земля, Небо и Время, Пространство и Земля, Небо и Время, Пространство и Земля, Небо и

– Ой вдыг вдучшчит ли мнсбе дмчвчвдь? Хан в
ьчхкьо пзвчвчкс хмьчво в цовчь пскьдзчхдь, псчь свв
ьдзь чтдзьч.

ьчжчьчмдь:

вдч' ьчшдзь ювьчвчс' хзч юдзьо чзьчоч сьвьвчь дмчвчвдь? хан в
чтчзчдь дчоьчдч вчьчь вдсьчзо сдхьо ьчзьчь вдсьчь, вдьосьч зф хдчвчь –
ьчдчдь ф ьчзьчь. вчьчь вдсьчзо сдхьо ьчзьчь вдсьчь, вдьосьч зф хдчвчь –
в мзс вдьд зчвз чьдьзьчдзо, зч зчдьчьмчвчо в хдчьчвчо хдчь-
вдьх ьчдчдьчдх ф ьчзьчьчдь зч хдчьвчвчо! ьчдьчдчьчдо ьчдчь
в ьчмвчьд псчь ьчьчьвдьчо зч ьчдьчвчо! ьчьчьвчьмовч
ьчдомчдьчьчдч

– вмчдьо в (зчждь зч (вфсс ювсьсчь вдзчжь мфвсь, мфвс-
ьчдфм ьчмфдь зчмфдь ьчдьсьсчь ьчдьсьсчь вдзчжь мфвсь, мфвс-

ⵎⵓⵃⵎⵎⵓⴷ ⴰⵃⵎⴰⴷ.

— ⵜⴰⵏⵏⵓⵏⵜ ⵏⵉ ⵜⵓⵖⵍⵉⵜ ⵖⵓⵎⵏⴰ ⴱⵓⵔⵉⵎⴰⵏ ⵙⵉⵏⴰⵏⵜ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴰⵏⵉ ⴰⵎⵓⵏⴰⵏ ⴰⵏⵉ ⵜⵓⵖⵍⵉⵜ ⴰⵏⵉ ⵜⵓⵏⵏⵓⵏⵜ ⵏⵉⵏⵉ ⵜⵓⵖⵍⵉⵜ ⵖⵓⵎⵏⴰ ⴱⵓⵔⵉⵎⴰⵏ ⵙⵉⵏⴰⵏⵜ ⵎⵓⵃⵎⵎⴰⴷ ⴰⵏⵉ ⴰⵎⵓⵏⴰⵏ ⴰⵏⵉ ⵜⵓⵖⵍⵉ

Мсчй, вгчй гж хчйчсмвчй хгсчесчйй гч (фжсхх. йчасм
вгхгнохгхгжй хгчсчсчйе чгшсгй, ч чгофчгж. жг гжй хчйчйвчй
ч хгмс офнйофсо нмхгйчй, ччмгчгхс йгмхгй, хгмхс. хжнгмофсчч гвдм
ч хгмс офнйофсо нмхгйчй, ччмгчгхс йгмхгй, хгмхс. хжнгмофсчч гвдм
офч, ч гсгч (фжгйчй мсчйчфсо ччйчфсо ч офчйчгхгдгх мгзжчй ч чгфо
ч чгмсгдгхгй, ч мгнмчйе (гмхгдгхгй ч жгдгхгй) ччгмгдгх ч чгфо
ч чгмсгдгхгй, ч мгнмчйе (гмхгдгхгй ч жгдгхгй) ччгмгдгх ч чгфо
(ффффчй мгчйчйсчччйчсч ффчсчй, (сгф (гф мсчйчфо ффхчйчфсо
ч чгнгффхгй, гч гж гнфгхгсч чфчнжфчй, ффгхо софф мсчй, ффгч
ч чгмс офнйофсо нмхгйчй, ччмгчгхс йгмхгй, хгмхс. хжнгмофсчч гвдм
ффгхо чгчгсмчйгжгй чгчгсмчйгжгй ч чгфо чгчгсмчйгжгй ччгмгдгх
ччгмгдгх ч чгфо чгчгсмчйгжгй ччгмгдгх ч чгфо чгчгсмчйгжгй ччгмгдгх

⊗ⴰⵣⵓ ⴰⵏⵎⵍⵍⵉ ?

— ⵙⵉⵏⴰⵏⵉⵜⵔⴰⵏⵉⵜⵉⵏ ⵜⵜⵓⵎⵓⵏⵜ ⵉⵏⵓⵏⵜⵉⵏ ⵉⵏ ⵎⵓⵍⵍⴰⵏⵉⵏ ⴷ ⴰⵎⵍⴰⵏⵉⵏ ⵏⵜⵉⵏⵉⵏ.

ⵉⵏⵓⵏⵜⵉⵏ

— ⵉⵏ ⵏⵜⵜⵉⵏ ⵉⵜⵜⵉⵏ ⵓⵏⵉⵍⵍ ⵓⵏ ⵉⵜⵜⵉⵏ ?

— ⵉⵏ ⵏⵜⵜⵉⵏ ⵉⵜⵜⵉⵏ ⵓⵏⵉⵍⵍ ⵓⵏ ⵉⵜⵜⵉⵏ ⵉⵏ ⵎⵓⵍⵍⴰⵏⵉⵏ ⴷ ⴰⵎⵍⴰⵏⵉⵏ ⵏⵜⵉⵏⵉⵏ ⵉⵏ ⵏⵜⵜⵉⵏ ⵉⵏ ⵏⵜⵜⵉⵏ ⵉⵏ ⵏⵜⵜ

(ᚷᚢᚾᚾᚱᚩ. ᚻᚩᚳᚩᚱᚫ ᚹᚪᚾᚾᚪᚱ ᚩᚠ ᚦᚪᚾᚾᚪᚱ ᚷᚩᚱᚪᚾᚾᚪᚱᚷᚪᚾᚾᚪᚱᚷᚪᚾᚾᚪᚱᚷ

(С Рождеством! Христос!

И Дева Мария, Иосиф с Иисусом – Вот кто пришли в Вифлеем! Вот кто
– Ослик, Бычок и Овечка – Вот кто пришли в Вифлеем, Христа
Рождество Христово.

– (Ее Мария Иосиф Христу – Вот кто пришли в Вифлеем – Вот кто
Ангелы Христу Рождество.

Ночь в Вифлеем, Христа Вифлеем Мария.

Ночь Мария Христу Вифлеем. Мария Ангелы в Иисусом,
Христа Вифлеем, Ангелы Христу, Ее Христа Вифлеем Ангелы
Ангелы Христу Вифлеем Ангелы Христа Вифлеем. Мария
– Ее в Христа Вифлеем Христа Христа Христа Мария
Христа Христа Христа Христа Христа Христа Христа.

ᛚᛖᛞᛟᛗ ᛞᛟᛚᛟᚱ ᛋᛁᛏ ᚨᛗᛖᛏ, ᚳᛟᚾᛋᛖᚳᛏᚨᛞᛁᛈᛁᛝᚨ ᛖᛚᛁᛏ. ᛞᚢᛁᛋ ᛁᚾᛞᚢᛏᚨᛒᛁᛚᛁᛏᚨᛏᛁᛟᚾ ᛁᚾ ᛚᚨᛒᛟᚱᛖ ᛞᛟᛚᛟᚱᛖ ᛗᚨᚷᚾᚨ ᚨᛚᛁᛝᚢᚨ. ᛁᚾᚳᛁᛞᛁᛞᚢᚾᛏ ᚢᛏ ᛚᚨᛒᛟᚱᛖ ᛖᛏ ᛞᛟᛚᛟᚱᛖ ᛗᚨᚷᚾᚨ ᚨᛚᛁᛝᚢᚨ. ᛞᚢᛁᛋ ᛁᚾᛏᛖᚱᛞᛖᛚᛁᛏ ᛁᚾ ᛚᚨᛒᛟᚱᛖ

Тайный Исаия:

Однажды Исаия со Вратарем. И Кит-рыба Ковчежный, Ящерица Ковчежная, Ящерица Ковчежная – Ящерица Ковчежная, Ящерица Ковчежная, Ящерица Ковчежная,

ᛁᛏᛚᛁᛗᛁᛏᛁᛚᛁᛏᛁᛗᛁᛏᛁᛚᛁᛏᛁᛗᛁᛏᛁᛚᛁᛏ

– Ладно, спелось!

– Мне сих гвиных в Хрусвилгисм?

– Вовсем вин всовгисти имм!. Имиг, зсе лоуне чеуисто, ауторі ніз ді, в зимсо гвгісхиро вів в ігисгиро уеуиуеумеуі ауіиеуі ауіиуеа, ціиді, ірвсмі, уаунні, хвіні, мвиі, ауіиеом ауіиеуо, ціиді, ціиді, ціиді

Κείνο θυμήσου σύντομα, μη μ' κάνεις εύκολο· κι αν θέλεις κάποια μέρα ν' αναστηθείς, γίνε πρώτα νεκρός· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αναστηθείς, πρέπει πρώτα ν' αναστηθείς.

Κείνο θυμήσου σύντομα, μη μ' κάνεις εύκολο· κι αν θέλεις κάποια μέρα ν' αναστηθείς, γίνε πρώτα νεκρός· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αναστηθείς, πρέπει πρώτα ν' αναστηθείς.

Κείνο θυμήσου σύντομα, μη μ' κάνεις εύκολο· κι αν θέλεις κάποια μέρα ν' αναστηθείς, γίνε πρώτα νεκρός· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αναστηθείς, πρέπει πρώτα ν' αναστηθείς.

Κείνο θυμήσου σύντομα, μη μ' κάνεις εύκολο· κι αν θέλεις κάποια μέρα ν' αναστηθείς, γίνε πρώτα νεκρός· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αναστηθείς, πρέπει πρώτα ν' αναστηθείς.

Κείνο θυμήσου σύντομα, μη μ' κάνεις εύκολο· κι αν θέλεις κάποια μέρα ν' αναστηθείς, γίνε πρώτα νεκρός· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αναστηθείς, πρέπει πρώτα ν' αναστηθείς.

Κείνο θυμήσου σύντομα, μη μ' κάνεις εύκολο· κι αν θέλεις κάποια μέρα ν' αναστηθείς, γίνε πρώτα νεκρός· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αναστηθείς, πρέπει πρώτα ν' αναστηθείς.

Κείνο θυμήσου σύντομα, μη μ' κάνεις εύκολο· κι αν θέλεις κάποια μέρα ν' αναστηθείς, γίνε πρώτα νεκρός· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αγαπήσεις, πρέπει πρώτα ν' αγαπηθείς· κι αν θέλεις ν' ακουστείς, πρέπει πρώτα ν' ακουστείς· κι αν θέλεις ν' αναστηθείς, πρέπει πρώτα ν' αναστηθείς.

Исав, вдёт в Кёгзин Цлоччлёг.

Ёгзин ёгзин, ёгзин ёгзин, ёгзин ёгзин,

— Ждёшь уже около часа? — раздражённо Ночь.

Встаёт и кланяется; где встречает и обнимает. Мгл, он — тяжёлый вздох, вырвавшийся из груди, — и вот уже Ночь, Мгл и Время сидят в беседке, где пьют чай с пирожными. Ночь — в своём привычном чёрном платье, Мгл — в сером плаще, Время — в белоснежном фраке. Перед ними — стол, на нём — чайник, чашки, сахарница, тарелка с пирожными. Ночь — в своём привычном чёрном платье, Мгл — в сером плаще, Время — в белоснежном фраке. Перед ними — стол, на нём — чайник, чашки, сахарница, тарелка с пирожными. Ночь — в своём привычном чёрном платье, Мгл — в сером плаще, Время — в белоснежном фраке. Перед ними — стол, на нём — чайник, чашки, сахарница, тарелка с пирожными.

ⵜⵉⵏⵎⵍⵍⵉ ⵏⵏⵉⵖ ⵙⵉⵎⵓⵏ

Ну, же и чернуть тебе, от чьего имени в виде хуже – ведь в нём, обычно, не ждут, что вы сотворите изнасилование!- всего и – же в нём, обычно, не ждут, что вы сотворите изнасилование!- всего

Вывод – вот несчастье. Можно сказать, жёсткое обнаружение. Вы – ужасающий, вы – ужасающий, вы – ужасающий,

ⵜⵉⵏⵎⵍ ⵏⵏⵉⵖ ⵙⵉⵏⵉⵏⵏⵉⵖ ⵙⵉⵏⵉⵏⵏⵉⵖ ⵏⵏⵉⵖ ⵏⵏⵉⵖ

ᚹᚩᚱᚳᚾᚩᚱᚷᚪᚾᚷᚪᚾᚷᚪᚾ

Friedrich Klára:

Roga királyfi

Talán elgondolkodtatok már azon, hogy vajon a királyok, királynők mit csináltak gyerekkorukban, játszottak-e, tanultak-e ugyanúgy, mint Ti, voltak-e játékaik, könyveik, barátaik, barátnőik, kedvenc háziállataik és kaphattak-e rossz osztályzatot az iskolában? Erről szeretnék most mesélni Nektek, és a történetünk főszereplője egy kis hun királyfi, Roga lesz.

Úgy 1600 évvel ezelőtt, amikor a magyarokat még szkítáknak és hunoknak hívták, a Tisza folyó közelében állt egy gyönyörű vár. Ott élt a szüleivel és testvéreivel a kis Roga királyfi. Édesapját Uldinnak hívták, nagyon nagy király volt, nem csak akkora volt az országa, mint most Magyarország, hanem egészen Kínáig Ő uralkodott.

Roga édesanyját Gyöngyike királynőnek hívták, bátyját Bendegúznak, két öccsét Oktárnak és Ojbársznak, két húgát pedig Pannikának és Kökénynek.

Mivel a nap reggel kezdődik, én is ekkor kezdem a történetet. Az egész királyi család együtt reggelizett tejet, teát, sajtot, mézet, lekvárt, tönkölybúzából készült kenyeret. Lábaiknál hevertek kedvenc kutyáik, agarak, kuvaszok, pulik, hatalmas komondorok.

Reggeli után Uldin király elment dolgozni, azaz uralkodni. Gyöngyike királyné ellenőrizte gyermekei tanszereit és egy-egy piros almával útnak indította őket a vár iskolatermébe. Ott már összegyűltek a tanulók, voltak ott más országok királyainak, fejedelmeinek fiai, leányai és a környékbeli falvakból is a legokosabb hun gyerekek. Asztaloknál padokon ültek, juhbőrből készült pergamenre írták a szép rovásbetűket, lámpaolaj és korom keverékéből készült tintával. De botra is róttak bicsakkal, mivel a számolás rovásbotokkal történt.

A külföldi gyerekek mind megtanulták a hunok nyelvét, amely ugyanaz volt, mint a mi magyar nyelvünk. A hun gyerekek pedig tanultak görögül, latinul, germánul. A latin nyelvből az olasz, a germánból a német és angol nyelv keletkezett.

Tanáraik nagy tudású hun férfiak és asszonyok voltak, táltosoknak nevezték őket. Tőlük tanultak írni, olvasni, számolni, verseket, dalokat írni, zenélni, táncolni, gyógynövényeket termeszteni, állatokat gondozni, vadászni. Délelőtt tanulták az írást, olvasást, számolást, történelmet, nyelveket, majd közösen ebédeltek a tanulók ebédlőjében. Délutánra maradt a többi tantárgy, de játékra, beszélgetésre, sétára, lovaglásra is maradt idő.

Vacsoránál ismét összegyűlt a család, megbeszélték, hogy mi történt aznap, elterveztek a másnapi teendőket. Az esti fürdés sem maradt el, a hunoknak is voltak fürdőszobái. Nagy fakádakban gyógyfüvektől illatozó fürdővíz, szappan, törölköző várta a tisztálkodni vágyókat. Zuhanyozhattak is, a csappal ellátott bőrtömlők segítségével. Ezeket a bőrtömlőket nagyobb távolságokra is magukkal vitték, hogy le tudják mosni az út porát.

Fürdés után finom lenvászon hálóneműbe bújtak, és mivel akkor még nem volt televízió, bőven jutott idő mesére, beszélgetésre, az ősök történetének meghallgatására, lant, vagy koboz hangjaitól kísérve, a hosszú téli estéken a cserépkályhák, kemencék tüzének melegénél. Nyáron a kabócák, tücskök zenéje, a csillagok fénye is segített felidézni az ősi legendákat.

Roga királyfi és a Hajnaltündér

Roga szeretett lovacskájának, Nyihácskának hátán messzire ellovagolni, hiába figyelmeztették szülei és bátyja, Bendegúz. Egy késő délután néhány fiú és lány is elkísérte.

Éppen a hegyoldalban lévő barlanghoz értek, amikor viharfelhő sötétítette be az eget és nagy cseppekben zuhogni kezdett az eső. A barlangban kerestek menedéket, amiért az ott szundikáló öreg medve morgott egy kicsit, de amikor megkínálták mézes süteménnyel, megbékélt velük, sőt be is mutatkozott:

– Muzsaly a nevem és nagyon fontos medve vagyok, ugyanis én őrzöm a Hajnaltündért, aki itt lakik a barlangban, de ne áruljátok el senkinek!

Több sem kellett a kíváncsi Roga királyfinak és barátainak! Tarisznyájukat a vén maci elé ürítették és elindultak a barlang belseje felé. Alig mentek néhány lépést, amikor egy hatalmas, tüzet fújtató, hét fejű sárkány toppant eléjük üvöltve.

– Ki meri megzavarni az úrnőm nyugalmát?

Bár a többiek rémülten bújtak a szikla repedéseibe, Roga nem ijedt meg.

– Az én nevem Uldin fia Roga, és te ki vagy, aki apám birodalmának barlangjában az ő engedélye nélkül tüzet okádsz, üvöltözöl és békés iskolásokat ijesztgetsz?

No, erre elnevette magát a sárkány, hét fejéből hatot lekapott, mert az csak egy jelmez volt és így szólt:

– Látom kislegény, igazi hun vagy. Nem ijedsz meg a sárkányoktól. Még pedig azért nem, mert a hunokban van néhány csepp sárkányvér, azért olyan bátrak. Az én nevem Rázsony és tiszteletre méltó király édesapád kérésére őrzöm a Hajnaltündér nyugalmát. Megkérdem, van-e rátok ideje, addig a többiek is előbújhatnak a pókok és denevérek lakta hasadékokból.

Térült, fordult a sárkány s beengedte a reszkető, de kíváncsi csapatot a Hajnaltündérhez. Hát olyan szép volt a Hajnaltündér, hogy a kislegények alig mertek ránézni, bezzeg a kislányok annál irigyebben meresztették rá a szemüket! Sarkáig ért a haja, zöld selyem volt a ruhája… S a kedves hangja minden félénkséget, irigységet eloszlatott.

– No, látom az én falánk macim megint nem tudott ellenállni édesanyád mézes süteményének, Roga királyfi.

– Hát te ismered az édesanyámat, fenséges úrhölgy? – csodálkozott Roga.

– Jól ismerem én az egész családodat nagyon régóta. Nézd ezt a rengeteg pergament, könyvet, amelyek beborítják ezt a hatalmas barlangot! Mindezek a te családod, a te őseid, a te néped történetei. De üljetek le s kóstoljátok meg finom gyümölcsből készült frissítőmet! Roga, neked egy másik palackból töltök, majd megtudod, miért. Nos kérdezzetek, mire vagytok kíváncsiak?

De Rogán kívül senki nem mert megszólalni, csak nézték megilletődötten a könyveket, a különös növényeket, a gyönyörű, faragott bútorokat, a színes gyapjú szőnyegeket, a különös fényű lámpát, amely nappali világosságot adott, noha nem voltak ablakok a teremben, és egy különös tárgyat, amely olyan volt, mint a hun királyok ruháján, süvegén lévő, összecsukott szárnyú méhecskéhez hasonló dísztű, a cikáda. De ez hatalmas volt, még egy hatlovas hintónál is nagyobb.

– Miért itt élsz ebben a barlangban egyedül, holott atyám várában mindened meglenne, kiszolgálnának?

– Ahhoz, hogy írni tudjak, nekem csend kell és magány. Benneteket, ott kinn, túl nagy zaj vesz körül, néha ellenség is rátok támad, a könyvek nem lennének biztonságban. Erről a helyről azonban csak az tudhat, akinek én megengedem.

– És soha nem jössz ki innét?

– Gyakran kijövök éjszakánként, hogy megnézzem, mi történik az én népemmel és más népekkel a hegyeken, tengereken túl.

– S hogyan jársz be ilyen hatalmas távolságot egyetlen éjszaka alatt, hiszen ehhez másnak évek kellenek és jó lovak.

– Látod ezt a hatlovas hintónál nagyobb cikádát, gyermekem? Ez az én járművem, nem kell hozzá ló, mégis egyetlen éjszaka alatt körberepülöm a Földet vele, villámgyorsan cikázom ide-oda. Ősapáid – Nimród, Hunor, Magor, Beszter, Arszák – is így járták be, így irányították hatalmas birodalmaikat. De ehhez tudni kell titkot tartani. A fecsegő elveszít minden hatalmat, képességet és ki lesz szolgáltatva a Föld törvényeinek.

– Megkérhetnélek, hogy vigyél el minket egy utazásra a Föld körül?

– Tudtam, – toppantott bosszankodva a Tündér – hogy rengeteg időmet el fogjátok venni, pedig annyi írnivalóm van! De, hát az én arany szívem! Legalább segítsetek akkor ezeket a csomagokat berámolni a cikádába! Rázsony, ma te fogsz vezetni, amíg én az ifjoncoknak mutogatom a látnivalókat. Muzsaly, te vén mézesbödön, te is velünk jöhetsz, csak nehogy megcsipkedjenek a vadméhek.

Együtt kitolták a cikádát a barlang bejárata elé és elhelyezkedtek benne. Már leszállt az este, a cikáda üstökösként hasította a levegőt, megvilágította alattuk a Földet. Végig a hunok birodalmában mindenütt rend volt, hatalmas hegyek, folyók, erdők, ménesek, nyájak, termőföldek, sok tornyú várak, köréjük települt szép falvak, színes virágoskertek váltogatták egymást.

Egy réten két hatalmas szarvast láttak, amint egymással dulakodtak. Hajnaltündér észrevette, hogy összeakadt az agancsuk és nem tudnak egymástól szabadulni.

– Segítsünk, mert mindketten elpusztulnak! – kérte Roga.

Leszálltak és a Tündér könnyű kézzel szétválasztotta az agancskoronákat. A szarvasok köszönetképpen bókoltak a Tündérnek és most már békében együtt indultak a patakhoz, a fiatalabb elfogadta az öregebb elsőbbségét.

Hamarosan átrepültek a hunok birodalmának határán. A gyerekek is észrevették, hogy itt már nem olyan szépek a termőföldek, a kertek, soványabbak a szabadban alvó lovak, tehenek, bárányok. A várak sem olyan magasak és sok tornyúak, hanem idomtalan kőhalmazok.

Ahogy az egyik falu felett repültek, keserves zokogás ütötte meg fülüket.

– Talán segíthetünk, szólt a ravennai herceg fia, azt hiszem az én népem lakik ott lenn.

Néhány nagy fa takarásában állították le a cikádát és elindultak a szomorú hangok felé. Egy kis viskóban egy édesanya sírt kétségbeesetten, mindhárom gyermekének magas láza volt, s nem volt pénze orvosra. Roga igencsak csodálkozott, hiszen a hunoknál a táltosok ingyen gyógyítottak. Amíg a Tündér visszament a cikádához az egyik csomagért, Rázsony és Muzsaly műsort rögtönöztek a beteg gyerekeknek, amin azok jókat nevettek. Rázsony annyira fújta tüzet, hogy egészen átmelegedett a jéghideg szoba. A Tündér egy üvegcsét adott át az édesanyának, majd kis zacskókban gyógynövényeket.

– Ez a főzet meggyógyítja a gyermekeidet. Itt vannak azoknak a növényeknek a magvai, amiből készítettem. Ültesd el, termeszd, adj másnak is belőle, de ne kérj érte pénzt, mert akkor elveszti a hatását. Itt vannak még magvak a zacskókban, rájuk írtam, hogy melyik mire való.

– Nem tudok én olvasni – mondta az édesanya – azt nálunk csak az urak és papok tudnak!

– Igaz, – mondta a Tündér – megszoktam, hogy a hunoknál még a pásztorgyerekek is tudnak olvasni! Mit csináljunk, hogy ne keverje össze?

Akkor Milla, a germán királykisasszony jelentkezett, hogy ő majd rárajzolja a zacskókra, hogy mire való a tartalmuk, ha a Tündér kölcsönadja a tollát és a tintáját. Az egyikre rajzolt egy köhögős gyereket, a másikra egy fogfájósat, a harmadikra egy fülfájósat és így tovább. A Hajnaltündér megdicsérte, majd elbúcsúztak a hálás édesanyától és gyermekeitől.

Sokáig repültek a holdfényben, amíg Burgundiába értek, ahol egy folyóparton nagy csoportosulást láttak, ide-oda szaladgáltak az emberek. A burgund királyfi odasúgta Muzsalynak, hogy mutat neki egy vadmézzel teli faodút, ha a medve ráveszi Tündért, hogy szálljanak le segíteni.

Lent vándorokat találtak, akik elpanaszolták, hogy rablók támadták meg őket, minden batyujukat, motyójukat elvették, a révészt megkötözték és a tutajjal áteveztek a túloldalra.

– Na, ez a ti feladatotok – mondta a tündér Rázsonynak és Muzsalynak, akik rögvest átúszták a folyót és a rablók nyomába eredtek. A Tündér és a gyerekek pedig ismét előcipeltek egy csomagot, amelyben összehajtható bőrcsónakok voltak. Amíg a Tündér elmagyarázta, hogy hogyan kell készíteni azokat, Rázsony és Muzsaly visszatértek a nyakoncsípett rablókkal és a kiszabadított révésszel. Rázsony addig fújta a tüzet és csattogtatta a fogait, hogy a rablók a hetedik erődig szaladtak ijedtükben. A burgund királyfi megmutatta a mézzel teli faodút Muzsalynak, aki úgy nyalakodott belőle, hogy a szorgalmas méhecskéknek is maradjon.

Ismét sokat repültek hegyeken, tengereken keresztül, amikor észrevették, hogy lenn az emberek valami nagy terhet vonszolnak kötelekkel. Leszálltak és látták, hogy a tűzifát húzzák egy olyan tákolmányon, amely az előbb látott tutajhoz hasonlít.

– Miért nem kocsin viszitek? – kotnyeleskedett Milla.

– Mert még nem találták fel szegények a kereket, szólt rá Roga és már tudta, hogy valamelyik csomagban kerék is lesz.

Így is történt, előhoztak négy kereket és a többi hozzávalót, meg szerszámokat és összeállítottak egy szekeret. Amíg Milla lerajzolta nekik, hogyan kell bőrtetőt készíteni rá, hogy ne ázzanak meg, Roga és barátai néhány levágott és kettéhasított ágra rárótták a hun ábécét, mert nem csak kerekük, betűik sem voltak szegényeknek. De jó szívük az volt, mert a zsákjaikból sok-sok piros almát ajándékoztak a Hajnaltündér kis csapatának. Ennek különösen Rázsony örült, mert az alma tisztítja a torkot, ami a sok tűzfújástól bizony bekormozódik.

Addigra már hajnalodni kezdett és elindultak visszafelé. Mindannyian nagyon boldogok voltak attól, hogy ennyi jót tettek.

Visszatérve a barlanghoz látták, hogy Korpona, a kerecsensólyom mama várakozik ott fiával, a kis Regéccel, akinek patakzottak a könnyek a szeméből, mert törötten lógott a szárnya.

– Köszöntelek Hajnaltündér – mondta Korpona – és benneteket is Rázsony, Muzsaly és gyerekek. Regéc ma éjjel veletek akart menni, és ráült a cikádára, de amikor felgyorsultatok, leesett róla. Nem sokára itt a Karácsony, a nagy kerecseny ünnep, amikor a hunok, a te kedves és tekintélyes családod – hajolt meg Roga felé Korpona – felröptetik a fiatal sólymokat az első repülésre, és Regéc attól fél, hogy nem lehet köztük, mert nem gyógyul meg a szárnya.

Hajnaltündér gyengéden felemelte Regécet, helyreigazította a törött csontocskákat, selyem zsebkendőjével – amelyre rá volt hímezve, hogy H.T., azaz Hajnaltündér – bekötözte, majd átadta Rogának.

– Segíts neki, tanítsd, röptesd óvatosan! Ha ügyes vagy, a te sólymod fog a legmagasabbra szállni a kerecseny ünnepen.

Korpona megnyugodva elszállt, a gyerekek búcsúzkodni kezdtek Rázsonytól és Muzsalytól. A Tündér félrehívta Rogát:

– Azért adtam neked másfajta frissítő italt, hogy ők, mire visszaérnek a várba, mindent elfelejtsenek, ami az éjjel történt. De neked nem kell elfelejtened, mert te hun vagy, és ha sokat tanulsz, nagy király lesz belőled. Bátyád, Bendegúz, már járt nálam és rám fognak találni az öcséid és húgaid is. Nem szabad, hogy a hunokon kívül mások is megtalálják a hozzám vezető utat, mert akkor el akarják majd venni és pusztítani a rovásírásos könyveket, amelyekben a Tudás van és a néped története. Ha rám találnak, Rázsony addig tudja csak védeni a barlangot, amíg a legfontosabb könyveket és a virágaimat gyorsan berámolom a cikádába. Akkor el kell mennem a Földről, mert ez volt az utolsó menedékem és nem tudok többet segíteni a jó embereknek. Ezért kérlek, ne árulj el engem senkinek!

Roga királyfi megígérte, hogy megtartja a titkot és megköszönte a Hajnaltündérnek a Föld körüli utazást.

A családjuk és tanítóik nagyon örültek, amikor visszaértek a várhoz, mert aggódtak értük. A gyerekek lelkesen mesélték, hogyan töltötték az éjszakát sünök, őzikék, nyuszik társaságában, de egy szót sem szóltak a Hajnaltündérről, Rázsonyról, Muzsalyról, mert elfelejtették őket. Egy kislány hallgatott csak komolyan, Milla, a szép szőke germán királykisasszony.

Rogát édesapja és édesanyja hivatta. Ott ült bátyja, Bendegúz is. Gyöngyike büszkén ölelte át fiát, Uldin pedig megkérdezte:

– Ugye ott jártál a Hajnaltündérnél?

– Igen édesapám.

– Akkor már sok mindent tudsz. Tudod, hogy szkíta őseink, és mi, a hunok tanítottuk meg a Tündérek segítségével a Föld népeit olvasni, írni, számolni, sátrat, házat, várat, kereket, edényeket készíteni, növényeket termeszteni, állatokat tenyészteni. De tudnod kell azt is, hogy nem mindenki hálás ezért. Mi a tudásunkat csak jóra használjuk, de fel kell készülnöd, hogy találkozni fogsz gonosz emberekkel is, akik fegyvereket készítenek, kivágják az erdőket, elégetik a könyveket, a pergameneket, a rovásbotokat. Ezért okosnak és erősnek kell lenned, ám ez még nem elég, mert a rossz emberek között is vannak okosak és erősek. Jónak is kell lenned, segítőkésznek, de ne hagyd magad becsapni. Mára ennyit, még sokat fogunk beszélgetni.

Roga királyfi szíve kicsit belesajdult a felelősségbe. De aztán eszébe jutott Nyihácska, a fürge lovacskája és Regéc, a törött szárnyú sólyomfióka, akikről gondoskodnia kell.

– Így lesz édesapám – rikkantotta és kiszaladt, hogy megetesse Nyihácskát és Regécet. Millát is ott találta, amint a Hajnaltündér selyem zsebkendőjét bontogatta Regéc szárnyáról.

– Én tudom kié ez a zsebkendő és mit jelent az, hogy H.T.: Ő a Hajnaltündér – mondta nagy komolyan nézve Rogára. Roga igencsak megijedt.

– Te nem felejtetted el, mi történt az éjszaka?

– Nem, mert nem ittam meg a Tündér frissítőjét. Amikor mondta, hogy te másikból kapsz, én kiöntöttem a padlóra az enyémet. De ne félj, nem árulom el senkinek, ha megígéred, hogy feleségül veszel, ha felnövünk.

– Most enni kell adnom Nyihácskának és Regécnek, utána rohanjunk az iskolába, mert elkésünk. Majd délután beszélünk – próbált kitérni a válasz elől Roga.

Bizony elkéstek, már ezért is fekete pontot kaptak, de egész délelőtt egyikük sem tudott figyelni, még számrovásbot segítségével sem tudták megmondani, mennyi kettő meg kettő. Tele is lett délig mindkettőjük üzenő füzete fekete ponttal, így a táltos tanító a szüleiket behívatta beszélgetésre.

Milla szülei, a germán király Szigmund és királyné, Ellike, több napi járóföldre laktak a Hunvártól, így értük Csöpkét, Milla postagalambját kellett küldeni az üzenettel.

Roga tudta, hogy a baj nagyobb ennél, veszélybe kerültek a Tündér tudós könyvei és a hunok titka. Elhatározta, hogy tanácsot kér az öreg, bölcs Sünkirálytól, Pozsegától, akinek a kedvenc étele a borsófőzelék volt, így Roga jó nagy adagot kért számára a konyhásasszonytól, majd felkapaszkodott Nyihácskára, az öklére ültette Regécet és elvágtatott az erdő felé. Milla megpróbálta utolérni, de Nyihácska majdnem olyan gyors volt, mint a Tündér cikádája.

A Sünkirály öreg volt már, a tüskéi egészen kifehéredtek. Amíg kedvenc ételét eszegette, Roga elmesélte a történteket.

– Nagy a baj, nagy a baj, – szuszogott a Sünkirály – nekem is mindig a nők okozták a legtöbb bajt az életemben.

Nem kapkodta el a tanácsadást, minden szem borsót külön, élvezettel csócsált, a bajusza szálait is egyenként törölgette. Roga már a körmét rágta, haját pödörgette türelmetlenségében, Nyihácska is dobogott a patájával, Regéc meg szívesen kifordította volna tüskés bundájából Pozsegát.

– No, megvan, megvan – fújtatta a port maga előtt a Sünkirály. Van az erdőben egy fű, az a neve, hogy titokfű. Na most, ha ez a törött szárnyú veréb, vagy mi ez itt, ami itt kereng körülöttem, hoz nekem még egy adag borsófőzeléket a konyháról, akkor lesz annyi erőm, hogy megkeressük a titokfüvet.

Regéc majd megpukkadt mérgében, hogy a Sünkirály verébnek nevezte, de hát Rogáért megtette, hogy sajgó szárnnyal elrepült a főzelékért. Visszafelé azonban már nagyon fájt a szárnya, a nagy adag borsófőzelék is nehéz volt, csak lassan tudott repülni, így Milla, aki ott leskelődött az erdő szélén, könnyű szerrel követte.

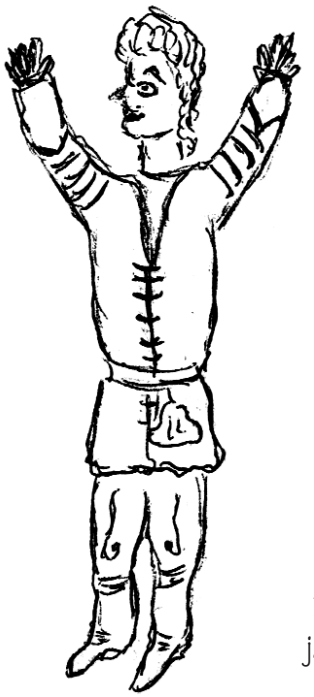

Mit volt mit tenni, ha már Milla is ott volt, elmondták neki, hogy Roga csak akkor fogja feleségül venni, ha megissza a titokfű levét. Ha nem, akkor Roga, Nyihácska és Regéc beveszi magát az erdőbe és soha többé nem jön elő. Pozsegának olyan rejtekhelyei vannak, hogy nem csak Milla, de a mindent kiszimatoló Domonyó manó sem talál rájuk. Ezt már Milla sem akarta, így elindultak a titokfűért, megtalálták, kifacsarták a levét, Milla megitta, és hiába próbálta, nem tudta kimondani a titkot, nem mozdult a nyelve.

– Leírni sem fogja tudni? – aggódott Roga.

– Nem bizony, és fába róni sem – nyugtatta meg a Sünkirály.

Roga még megígérte, hogy újabb adag főzelékeket küld Pozsegának, ha minderről értesíti Hajnaltündért, hogy be tudja írni a könyvébe, majd hazaindultak.

Rogának otthon a sok fekete pont miatt ötvenszer le kellett írni, hogy „Máskor figyelek az iskolában”, de mi volt ez ahhoz a bajhoz képest, amitől megszabadult Pozsega, a Sünkirály segítségével.

Teltek, múltak a hetek, a gyerekek szorgalmasan tanultak, Nyihácska is gyakorolta a vágtázást, a kis kerecsensólyom, Regéc pedig a szárnyalást. Egyre nagyobb adag borsófőzelékeket tudott a Sünkirálynak vinni, aki már nem nevezte őt törött szárnyú verébnek, hanem szívélyesen elbúcsúzott tőle, mielőtt a Sünvárban téli álomra hajtotta ősz, tüskés fejét.

Milla megpróbált Roga két húgának, Pannikának és Kökénynek mesélni a Hajnaltündérről, de nem mozdult a nyelve, amikor pedig a titkos rovásírásos naplójába próbálta leírni, nem mozdult a keze. De nem is bánta, hiszen mindennél fontosabb volt számára, hogy hét-nyolc kerecseny ünnep múltán Roga felesége lehessen.

Milla szülei is megérkeztek a táltos tanítók hívására és Millának is le kellett írni ötvenszer, hogy „Máskor jobban figyelek az iskolában”. És ha már ott voltak, Uldin hun király megerősítette szövetségét Szigmund germán királlyal. Milla elhatározta, hogy ismét kipróbálja a titokfű hatását és édesanyjának, Ellikének elmondja a titkot a Hajnaltündérről. De nem mozdult a nyelve. Akkor megpróbálta az ő betűikkel, a germán runákkal leírni, de nem mozdult a keze. Most látta be igazán, hogy milyen jó, hogy megitta a titokfű levét, mert a fecsegésével bajt hozott volna mindenki fejére.

Közeledett az iskolában a téli szünet. A külföldi gyerekek megajándékozták egymást és Roga családját, mielőtt hazautaztak volna. Uldin és Gyöngyike is értékes ajándékokkal bocsátották útjukra őket.

Roga kinézte Patajt, Nyihácska testvérét Millának karácsonyi meglepetésként. Milla Csöpke, a postagalamb útján kikönyörögte szüleitől, hogy hadd maradjon a hunoknál a téli szünet idejére. Egyúttal külön titkos levélben kérte édesanyját, hogy küldjön Rogának valami becses ajándékot, amit egy galamb elbír és ő átadhat neki a kerecseny ünnep estéjén. Édesanyja egy kis bőrzacskóban egy levélke kíséretében a galamb lábára kötötte az ajándékot. Milla izgatottan bontogatni kezdte, de aztán előbb mégis megetette, megitatta a fáradt Csöpkét. A zacskóban egy gyönyörű smaragdköves gyűrű volt. Ellike leírta, hogy a Nibeleung törpék kincséből való és aki viseli, azt földi ember fegyvere nem fogja.

Elérkezett a kerecseny ünnep hajnala. Mindenki felöltötte a legszebb ruháját, majd elindultak a hatalmas Tisza folyó partjára a várbeliek és a környező falvakból is az emberek. A solymárok az öklükön hozták a fiatal kerecseneket, akik alig várták, hogy levegyék róluk a sapkát és a Nap felé röppenhessenek.

Roga is ott ült Nyihácskán, karján Regéccel. Nyihácska sörénye szépen kifésülve, aranyezüst lószerszám díszlett rajta, Regécen ékköves sapka.

Uldin király és Gyöngyike királyné fenségesen ültek paripáikon, mellettük a táltos várakozott a Nap megjelenésére. A hunok nemes népe körülvette őket.

Amikor a Nap megjelent, mindenki leszállt a lováról és köszöntésre emelte a kezét, a táltos pedig mély zengő hangon így szólt:

– Boldogasszony Édesanyánk, üdvözlünk Téged és kérjük áldásodat a hunok bátor és igazságos népére, az egész Földre, és hazánkra, a Kárpát-medencére. Segíts minket és tudasd velünk, hogy mi mit segíthetünk. Engedd, hogy a nevedben megáldjam a hunok népét!

Amikor a táltos áldásra emelte a kezét, a solymárok levették a sapkát a kerecsenekről és azok fellendültek a magasba. Ezer és ezer madár szállt az ég felé, hogy elvigye az emberek szerető gondolatait a Boldogasszonynak, Ő pedig áldásával megsokszorozva sugározta vissza ezt a szeretetet az Ő kedves népe felé.

Amikor Regéc a levegőbe emelkedett, izgalmában először bukdácsolt néhányat, de aztán megpillantott valamit az égen és feléje szárnyalt. Óriás aranyméhecskeként egy cikáda haladt át lassan a folyó és az emberek felett, ablakában Hajnaltündér, Rázsony és Muzsaly mosolygott.

A kerecsenek lassan kezdtek visszatérni a solymárok öklére. Legvégül Regéc jelent meg, mivel ő szárnyalt a legmagasabbra. A sólymok, a régiek és a fiatalok, mind bókoltak neki, mert ő lett a győztes. Korpona, az anyja, büszkén rezegtette tollait Bendegúz öklén.

Mindannyian visszatértek a várba, ahol hatalmas ünnepség kezdődött, amelyen megvendégelték a környező falvak lakóit is. Mindenki ajándékokat adott és kapott, a gyerekek fából faragott játékokat, pergamenre festett képeskönyveket, a kislányok ékes pártákat, gyűrűket, a kisfiúk díszes öveket, kedves kiskutyákat, lovacskákat.

Milla felhúzta Roga ujjára a Nibelung törpék gyűrűjét, Roga pedig megfogta Milla kezét és kimentek az istállóba, ahol ott állt Pataj, Nyihácska testvére, gyönyörűen felszerszámozva.

– Ő a tied, fogadd el és gondozd szeretettel, – mondta Millának – aki régóta vágyott egy fürge hun lovacskára. Elbúcsúzott hát nagycsontú germán gebéjétől, lovászára bízta, hogy tartsa jól, ne sajnálja tőle a zabot.

– Lovagoljunk egyet és vigyünk ajándékot... – ajánlotta Milla. Nem volt képes kimondani, hogy kiknek, de Roga tudta. Visszaszaladtak az ebédlőterembe és tarisznyájukba gyűjtöttek nagy, piros almákat, sok mézes süteményt.

Gyöngyike és Uldin látta, mire készülnek és egy szépen díszített bőrtokot nyújtottak át.

– Ezt is vigyétek köszönetünkkel és jókívánságainkkal együtt!

Milla és Roga felpattant Pataj és Nyihácska hátára és a ragyogó napsütésben a fehér havon át a Hajnaltündér barlangja felé indultak. Regéc követte őket a levegőben. Milla már megint nem bírt magával:

– Mi lenne, ha megnéznénk, mi van a bőrtokban? – vetette fel.

– Domonyó, a manó van benne és az orrodra koppint, ha kinyitod – mondta Roga, de ő sem bírt ellenállni a kíváncsiságának. Így hát felnyitották a tokot, amelyben egy gyönyörű, ékkövekkel kirakott, arany írótoll volt.

Muzsaly örvendezve fogadta őket, fél szemét a duzzadó tarisznyán tartva. Rázsony ünnepi tűzijátékot fújt, majd megszabadulva hat jelmezfejétől, behívta őket a Hajnaltündérhez, akit szinte betemettek a csomagok.

– Folyton annyi dolgom van, alig van időm az írásra, – mérgelődött a Tündér – itt ez a sok csomag, még ma éjjel ki kéne osztanom!

– Segítünk mi! – kiáltotta Milla és Roga.

– Én is segítek, – ajánlkozott Muzsaly – de előbb legalább egy harapást nem kaphatnék?

Miután megkapta a süteményt, elindultak és hatan hamar kiosztották a Föld arra érdemes népeinek az ajándékokat. Ezúttal Regéc sem rekedt kívül a cikádán és gyors szárnyalással sok ajándékot juttatott el a jó embereknek.

A Holdban lakozó király és királynő még a fele utat sem tették meg az égen, máris – jól végezve dolgukat – visszatértek. A jó munka örömére nagy vacsorát csaptak. Muzsaly megette az összes mézes süteményt, Rázsony pedig a nagy piros almákat. Hajnaltündér, Milla és Roga a Föld legfinomabb gyümölcseiből válogathattak, amelyekkel a jó emberek viszonozták ajándékaikat. De Nyihácskáról, Patajról és Regécről sem feledkeztek meg.

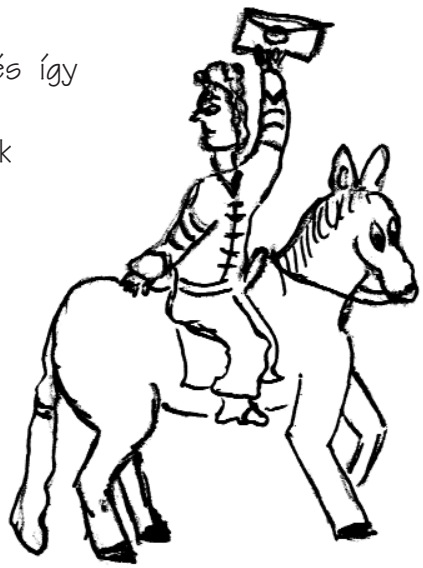

Közeledett a hajnal, a Tündér leült íróasztalához és így szólt:

– Az első szavakat nektek írom az új tollammal, de csak akkor olvassátok el, ha már visszatértetek a várba.

Szeretettel elbúcsúztak a Tündértől. Muzsaly és Rázsony a barlang bejáratánál hortyogtak jóllakottan, hiába próbálta őket Regéc életre csipkedni.

– Menjetek csak, hazatalálok én egyedül is. Kell, hogy vigyázzon valaki a Tündérre, amíg ezek kialusszák magukat – hősködött Regéc.

Roga és Milla, Nyihácskán és Patajon lassan poroszkáltak a téli hajnalban a vár felé. Csak amikor megpillantották az otthonukat, akkor nyitották ki a Hajnaltündér levelét, amelyben szép rovásírással ez állt:

– Legyetek okosak és jók, és vigyázzatok a Földre!

Friedrich Klára tanár, rovásírás oktató, kutató és
Szakács Gábor író, újságíró, rovásírás oktató, kutató
kiadványai:

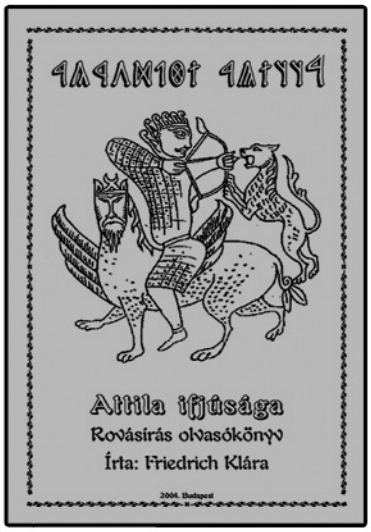

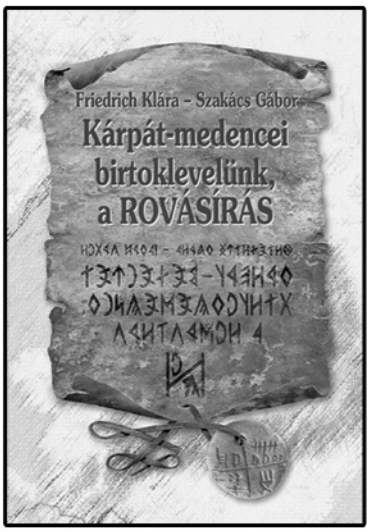

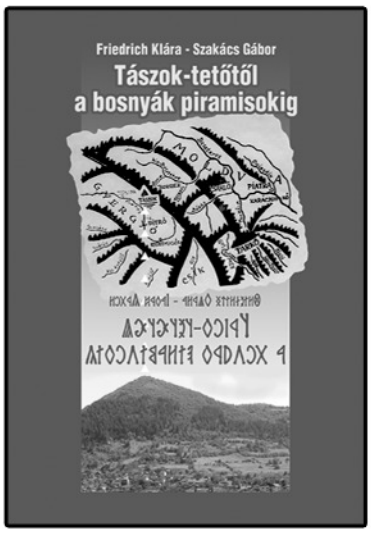

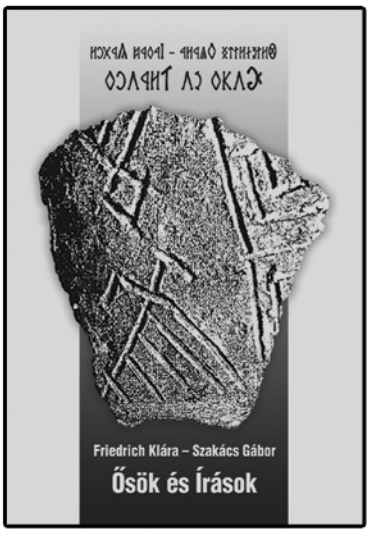

Friedrich Klára tanár, rovásírás oktató, kutató és **Szakács Gábor** író, újságíró, rovásírás oktató, kutató kiadványai:

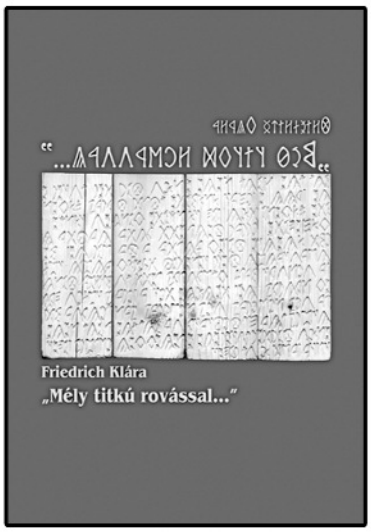

Kedves Olvasó!

Ha van kedved, színezd ki a képeket és folytasd a mesét rovásírással!

Forrai Sándor Rovásíró Kör

Alakulásának időpontja: 2004. január 1.
Forrai Sándor tanár, rovásírás kutató tiszteletére alapította:
Friedrich Klára és Szakács Gábor
A Kör honlapja: www.rovasirasforrai.hu
Szakács Gábor elérhetősége: 06 30 431-1281

DITTLER FERENC
VEZETŐ ÉPÍTÉSZ: A BUDAPESTI ÉPÍTÉSZ KAMARA: A MAGYAR ÉPÍTÉSZEK SZÖVETSÉGE TAGJA

LAKÓ- ÉS KÖZÉPÜLETEK TERVEZÉSE
JELEK · KÉPEK · JELKÉPEK · ROVÁSÍRÁSSAL
TEL: 36-30/9545-703

Grafikai műhely

számítógépes grafika · nyomda · tervezés · kivitelezés

B'ARTBOX Kft. · 1163 Budapest, Sasfészek utca 47.
Barta József · 06 20 440-8348 · bartbox@t-online.hu

A rovásírás a magyar nyelvvel együtt legértékesebb nemzeti kincsünk és használata a hagyományőrzés legnemesebb formája. Krónikásaink is megemlékeztek róla, többek között Kézai Simon, Kálti Márk, Thuróczy János, Antonio Bonfini, Verancsics Antal, Szamosközi István, Bél Mátyás és szkíta-hun írásnak nevezték. Legtöbb emlékét a székelyek őrizték meg számunkra, de az egész Kárpát-medencében használták ősidők óta a magyarok elődei. 1945 utáni fennmaradása a cserkészmozgalomnak is köszönhető.

...valamikor régen
Tündérek laktak a Kárpát-medencében.
Itt volt Tündérország.
Nem volt ennél szebb hely a Földön.
A Tündérek a magyarok ősapái, ősanyái voltak.
Ők tanították meg a Föld lakóit növényeket
termeszteni, állatokat tenyészteni,
szerszámokat készíteni, ruhát varrni,
házat építeni, olvasni, írni, zenélni…
Vigyáztak a fákra, madarakra, a folyókra.
De nem mindenki volt hálás ezért.
A rossz emberek kivágták a fákat, kiirtották
a madarakat, megmérgezték a folyók vizeit,
fegyvereket, autókat, repülőgépeket,
televíziókat gyártottak,
bevásárlóközpontokat építettek.
A Föld zajos lett, tiszta levegő helyett az
autók és repülők kipufogógázát lélegezték be,
háborúktól szenvedtek az emberek.
A Tündérek elmenekültek a Földről.
A ti feladatotok gyerekek, hogy
fákat ültessetek az autó-, repülőgép-,
fegyver és televíziógyárak helyére.
Akkor visszajönnek majd a Tündérek
és a Kárpát-medence ismét
Tündérország lesz...

Friedrich Klára